TEACHERS OF BIHAR
The Change Makers
Reg. No. BR/2025/0487469

# पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

नवंबर 2025
अंक 15

सर्दी की शुरुआत

मतदान

बाल दिवस

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

padyapankaj.teachersofbihar.org

# पद्यपंकज – नवंबर अंक

नवंबर अपने आप में एक बहुत ही अलग महीना है—ना पूरी ठंड, ना पूरी गर्मी... बस एक मीठा-सा बदलाव, जो मौसम, माहौल और मन—तीनों को छूकर जाता है। इसी परिवर्तन के बीच पद्यपंकज का नवंबर अंक लेकर आया है संवेदनाओं का एक नया गुलदस्ता।

इस महीने का पहला रंग था —मतदान का उत्साह। लोकतंत्र का यह सबसे सुंदर पर्व लोगों के बीच जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना जगाता है। इस अंक में शामिल रचनाएँ पाठकों को याद दिलाती हैं कि हर वोट राष्ट्र के भविष्य की एक ईंट है। कवियों ने मतदान को केवल कर्तव्य नहीं, बल्कि उत्सव, उम्मीद और परिवर्तन का प्रतीक बताया है।

नवंबर का दूसरा चित्र है—बाल दिवस, जो बच्चों की हँसी, खेल, सपनों और मासूमियत का उत्सव है। इस माह के रचनाकारों ने बालमन की सरलता और उनके भीतर बसते जगत को इतनी मधुरता से शब्दों में उतारा है कि पढ़ते-पढ़ते मन खुद बचपन के दिनों में लौट जाता है। इन रचनाओं में बच्चों की कल्पनाशक्ति, उनकी चमकती आँखें और उनके बेफिक्र कदमों की छाप साफ महसूस होती है।

तीसरी विशेषता है—सर्दियों की शुरुआत, जो वातावरण को एक अलग ही सौम्यता से भर देती है। हल्की ठंड, गुनगुनी धूप, सुबह की कोमल हवा और शाम की शांति... इस अंक में शामिल कविताएँ बदलते मौसम की इन्हीं महीन अनुभूतियों को पकड़कर सामने लाती हैं। ये रचनाएँ पाठकों को महसूस कराती हैं कि प्रकृति कैसे धीरे-धीरे अपना स्वर बदलती है और जीवन में ताजगी भर देती है।

इन तीन प्रमुख भावों के साथ-साथ नवंबर अंक में समाज, संस्कृति, शिक्षा, प्रकृति, मानवीयता और संवेदना से जुड़ी कई सुंदर और अर्थपूर्ण रचनाएँ भी शामिल हैं, जो इस अंक को और भी विविध और समृद्ध बनाती हैं।

पद्यपंकज का यह नया अंक पाठकों को कभी सोचने पर मजबूर करेगा,
कभी मुस्कुराने पर,
कभी बीते दिनों की याद दिलाएगा,
और कभी मन में उम्मीद की नई रोशनी जगाएगा।

हम आशा करते हैं कि यह नवंबर अंक अपने हर पन्ने के साथ आपकी संवेदनाओं को स्पर्श करेगा और साहित्य प्रेम को और गहरा बनाएगा।

# पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

## प्रकाशन सहयोग

### प्रधान संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

### संपादक एवं डिजाइन

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

### तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

### नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

# प्रधान संपादक की कलम से

हल्की सर्दी  संग में, खिली गुनगुनी धूप।
लिया नवल अब रूप है, भूतल छटा अनूप।।

लोकतंत्र के केंद्र में, होता है मतदान।
करें राष्ट्र-हित धर्म का, पालन सदा सुजान।।

प्रिय साथियों,

शरद ऋतु के किशोरावस्था की चंचलता और धरा धाम की मनमोहक सौंदर्य के बीच हमने नवम्बर माह में चुनाव की गहमागहमी देखी और अपनी कर्त्तव्यपरायणता का सफल प्रदर्शन किया। गंगा स्नान, बाल दिवस, वैवाहिक कार्यक्रम के साथ-साथ मद्यनिषेध एवं संविधान दिवस को भी हमने पूरी गर्मजोशी के साथ मनाया।

पद्यपंकज पत्रिका का यह अंक नवम्बर माह के इन्हीं खूबियों को लेकर आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ। जिसमें हमारे शिक्षकों ने अपने अनुभवों के शब्दों को रंग देकर नवल चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि अपने अनूठे अनुभवों से सृजित यह अंक सुधि पाठकों के अंतर्मन को स्पर्श करने में पूर्णतया सफल होगी।

लोकतंत्र के महापर्व की अनुभूति, आकांक्षाएँ और हमारी जिम्मेदारियों को चित्रित करती रचनाओं के साथ-साथ सर्दी में गुनगुनी धूप का आनंद देती बाल सुलभ विचारधाराओं के संग शब्द साधकों के विविध कल्पनाओं को अपने आँचल में समेटे यह अंक अपने आप अनोखा है। तथापि आपकी दृष्टि से कुछ ऐसा प्रतीत हो जो पत्रिका को अधिक सारगर्भित करती हो तो हमें अवश्य अवगत कराएँ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है और शिक्षक समाज निर्माता। हमारे विद्वान और सृजनशील शिक्षकों की लेखनी विद्यालय परिसर से बाहर निकल कर अपनी रचनाओं से समाज को सही दिशा देने का प्रयास कर रही है। हम ऐसे सभी शिक्षकों के ऋणी है जिन्होंने अपने शिक्षक धर्म का बखूबी पालन कर रहे हैं और समाज को सच्चाई का आईना भी दिखा रहे हैं। पत्रिका का यह अंक अपनी इन्हीं विशिष्टताओं को अपने आप में सहेज कर आप के बीच आयी है।

आप सुधि पाठकों से समर्थन, सुझाव और स्नेह की आस सँजोए।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

# शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है—जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

**डॉ रश्मि प्रभा**

संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

# शुभकामना संदेश

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

**डॉ स्नेहाशीष दास**

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

# अनुक्रमणिका


| क्रमांक | रचना का शीर्षक | रचनाकार | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | सर्दी आयी | आशीष अम्बर | 8 |
| 2 | आओ मिलकर मतदान करें | मनु कुमारी | 9 |
| 3 | ग्रामीण परिवेश | जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि' | 10 |
| 4 | बाल दिवस | गिरीन्द्र मोहन झा | 11 |
| 5 | हृदय की पुकार | बैकुंठ बिहारी | 12 |
| 6 | पुरुष होना आसान नही | मनु कुमारी | 13 |
| 7 | लेखनी | एस.के.पूनम | 14 |
| 8 | शिक्षक – कहमुकरी | राम किशोर पाठक | 15 |
| 9 | मतदाता जागरुकता | मृत्युंजय कुमार | 16 |
| 10 | विजयोत्सव दिवस | नीतू रानी | 17 |
| 11 | सर्दी का मौसम | मोहम्मद आसिफ इकबाल | 18 |
| 12 | बाल दिवस | राम किशोर पाठक | 19 |
| 13 | चुनाव कराते हैं | ओम प्रकाश | 20 |
| 14 | ये तो प्यारे बच्चे हैं | आशीष अम्बर | 21 |
| 15 | गुणगुणी धूप | जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि' | 22 |
| 16 | मतदान करें | अमरनाथ त्रिवेदी | 23 |
| 17 | बाल दिवस | डॉ स्नेहलता द्विवेदी | 24 |
| 18 | निद्रा | बैकुंठ बिहारी | 25 |

# सर्दी आई

सर्दी आई, सर्दी आई ,
लेकर कंबल और रजाई।
स्वेटर , कोट और शॉलों ने,
सबको दी पूरी गरमाई।

पर्वत – पर्वत बर्फ गिराती,
ठंडी – ठंडी हवा चलाती ,
बगिया – बगिया फूल खिलाती ,
अंग – अंग सबका ठिठुराती।

गरम हवाओं, रिमझिम वर्षी को ,
देकर चुपचाप विदाई ,
सर्दी आई, सर्दी आई ,
लेकर कंबल और रजाई।

कोने में सूरज जा बैठे,
मूँछें ताने ऐंठे – ऐंठे ,
सोने जैसी धूप सुहाती ,
मीठी – मीठी नींद सुलाती।

नई – नवेली दुल्हन जैसी,
होंठों – होंठों में मुस्काई,
सर्दी आई , सर्दी आई ,
लेकर कंबल और रजाई।

गाँव – गाँव और शहर – शहर में,
द्वार – द्वार और डगर – डगर में ,
नित हिमकण – सी बूँदे गिरती,
धुंध – धुएँ की चादरें बिछती।

भू – अंबर सब काँप उठे,
जब शीत लहर ने ली अंगड़ाई,
सर्दी आई, सर्दी आई ,
लेकर कंबल और रजाई।

**आशीष अम्बर**
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी, जिला – दरभंगा, बिहार

# आओ मिलकर मतदान करें

आओ मिलकर मतदान करें।
11 नवंबर की सुबह – सुबह,
देश का करके जयगान चलें।
आओ मिलकर मतदान करें।।

है मतदान अधिकार हमारा।
वोट देना है कर्तव्य हमारा।
हम कर्तव्यों का निर्वहन करें।
आओ मिलकर मतदान करें।

सुबह सबेरे करके स्नान।
राष्ट्र का मन में लेकर नाम।
हम भारत का उत्थान करें।
आओ मिलकर मतदान करें।

लोकतंत्र की शक्ति हम से।
राष्ट्र की सेवा भक्ति हम से।
नव भारत का निर्माण करें।
आओ मिलकर मतदान करें।

मन में जिसके नहीं हो खोट।
करे ना जो जन-मन पर चोट।
ऐसे प्रत्याशी का चयन करें।
आओ मिलकर मतदान करें।

मताधिकार का लाभ उठाएं।
अपना वोट हम डालके आएं।
हम स्वयं का कल्याण करें।
आओ मिलकर मतदान करें।

**मनु कुमारी**
प्राथमिक विद्यालय दीपनगर बिचारी, राघोपुर, सुपौल

# ग्रामीण परिवेश

सुबह सवेरे जाग,

कबूतर और काग,

धूप सेकने को बैठी, पक्षियाँ मुंडेर पर।

फसलें खेतों से जब

किसानों के घर आए,

पड़ते नजर झूमे, अनाजों के ढेर पर।

काम से फुर्सत पा के

बुजुर्ग जवान मिल,

आपस में बातें करें, बैठ छाँव तरूवर।

जब कभी मौका मिले,

जुट एक छत तले,

उत्सव मनाते सभी, एक साथ मिलकर।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'

# बाल दिवस

खेलो-कूदो, खूब पढ़ो,
बच्चों तुम जिज्ञासु बनो,
मोबाइल से तुम दूर रहो,
हो सके तो सदुपयोग करो,
सब काम करना सीखो,
माता-पिता, मित्रों के साथ,
तुम अपना थोड़ा वक्त बिताओ,
घर का थोड़ा-थोड़ा काम करो,
थोड़ा-थोड़ा दायित्व उठाओ,
खुद को जिम्मेदार नागरिक बनाओ,
सच्चरित्र, स्वावलंबी, कर्त्तव्यनिष्ठ बनो,
देशभक्ति का महान सद्गुण अपनाओ,
बच्चों ! खुद को तुम मनुष्य बनाओ,
खुद को जिम्मेदार नागरिक बनाओ,
वैज्ञानिक, अभियंता, चिकित्सक,
समाहर्ता, जीवन में बड़ा लक्ष्य बनाओ,
हो सके तो तुम महान दृष्टि बनाओ,
देश-सेवा, लोक-हित अवश्य कर्त्तव्य हो,
बच्चों चाहे तुम जिस पद पर जाओ,
खेलो-कूदो, खूब पढ़ो,
बच्चों तुम जिज्ञासु बनो,
मोबाइल से तुम दूर रहो,
हो सके तो सदुपयोग करो।

गिरीन्द्र मोहन झा

# हृदय की पुकार

हे मानव। सुन हृदय की पुकार,
प्रकृति से मित्रता कर, प्रकृति का सम्मान कर,
पेड़ पौधे जीव जंतु का सम्मान कर।
हे मानव। सुन हृदय की पुकार,
मानवता का सम्मान कर,
परस्पर प्रेम का विचार कर,
काम का तिरस्कार कर,
क्रोध का तिरस्कार कर,
मद का तिरस्कार कर,
लोभ का तिरस्कार कर,
मोह का तिरस्कार,कर,
मत्सर का तिरस्कार कर।
हे मानव। सुन हृदय की पुकार,
जीव हत्या बंद कर,
विचारों की हत्या बंद कर,
संस्कारों की हत्या बंद कर,
नैतिकता की हत्या बंद कर,
शिष्टाचार की हत्या बंद कर,
विनम्रता की हत्या बंद कर,
आदर्शों की हत्या बंद कर।
हे मानव। सुन हृदय की पुकार,
स्वयं से वार्तालाप कर,
अपने विकारों का बलिदान कर,
अपने सत्कर्मों का सम्मान कर,
अपने सपनों का सम्मान कर।।

**बैकुंठ बिहारी**
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सहोड़ा गद्दी कोशकीपुर

# पुरुष होना आसान नही

जिम्मेदारी का बोझ उठाए।
अपने नींद और चैन गंवाए।
वो मेहनत करें आराम नहीं।
पर मिलता उसे सम्मान नहीं।
सुनो!पुरुष होना आसान नहीं।

मिलते हैं उसे कई उपनाम।
बुजदिल,नकारा,जोरू का गुलाम।
डरपोक,नालायक , मातृभक्त सुनकर भी,
होता वह कभी परेशान नहीं।
पुरुष बनना आसान नहीं।

बहन  का रक्षक बनकर रहता।
पढ़ाई लिखाई संग शादी ब्याह क
,हँसकर वो हर फर्ज निभाता।
पैसा कमाता कमर तोड़ कर पर।
दिखलाता वो कभी थकान नहीं।
पुरुष बनना आसान नहीं।

उलाहने कभी पत्नी की सुनता।
माता पिता से दर्द छिपाता।
परिवार की सेवा में फिर भी।
होने देता कोई व्यवधान नहीं।
पुरुष होना आसान नहीं।

बेटा – बेटी भी बोल सुनाए।
फिर भी  कभी वह न उकताए।
प्रेम स्नेह का बारिश करके,सदा धैर्य का पाठ पढ़ाए।
देव रूप में पुरुष के जैसा ,धरती पर कोई इंसान नहीं।
पुरुष होना आसान नहीं।

सहनशक्ति का रूप पुरुष है।
मर्यादा का पाठ पुरुष है।
शिक्षा, सद्गुण,सदाचार का
सुंदर प्रेरक व्याख्यान पुरुष है।
पत्थर सदृश वह दिखता है पर
होता सच में पाषाण नहीं।
पुरुष होना आसान नहीं।

पुरुष से हीं यह जग है प्यारा।
पुरुष ने है जीवन को संवारा।
सभी रिश्तों का मान बढ़ाता।
बिन उसके जीवन में मुस्कान नहीं।
पुरुष होना आसान नहीं।

हर घर उनका मान बढ़े।
सिर पर सम्मान की ताज चढ़े।
सेवा प्रेम से मधुरिम जीवन बनाए।
कभी लाए वो तूफान नहीं।
पुरुष बनना आसान नहीं।

**मनु कुमारी**
प्राथमिक विद्यालय दीपनगर बिचारी, राघोपुर, सुपौल

# लेखनी

सोच रही है लेखनी,

कहाँ से प्रारंभ करुँ,

फँस गया विचारों में,हो न जाए परिहास।

तूलिका भी डर रही,

कागज है निष्कलंक,

शब्दों की बुनाई ऐसी,पाठक को आई रास।

डंठल से जन्म हुआ,

चारु बनी तराश से,

संकल्पना के भाव में,लिख रहा सदा खास।

जड़ित है स्वर्ण हीरा,

मिल गई पहचान,

सोचा नही कभी कोई,रहेगा दिल के पास।

**एस.के.पूनम**

सेवानिवृत्त शिक्षक, फुलवारी शरीफ, पटना

# शिक्षक – कहमुकरी

सबके हित को तत्पर रहता।
अपने हक में कभी न कहता।।
दोष गिनाते बने समीक्षक।
क्या सखि? साजन! न सखी! शिक्षक।।०१

भूली बिसरी याद दिलाए।
रोज नया वह राह दिखाए।।
दोष मिटाए जैसे पावक।
क्या सखि? साजन! न सखि! अध्यापक।।०२

प्रेम सुधा चित में है बहता।
नैनों से ही है कुछ कहता।।
संग नेह करता सभी कार्य।
क्या सखि? साजन! न सखि! आचार्य।।०३

हँसकर गले लगाता है वह।
पीड़ा कम कर जाता है वह।।
उसकी कोशिश करे आबाद।
क्या सखि? साजन! न सखि! उस्ताद।।०४

कभी हँसाए कभी रुलाए।
जीवन का हर मर्म बताए।।
कर देता है महिमा मंडित।
क्या सखि? साजन! न सखी! पंडित।।०५

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

# मतदाता जागरूकता

आओ मतदान करे हम,
लोकतंत्र का सम्मान करे हम।

वोट डालना है अधिकार हमारा,
इसको नही है जाया करना।

छोड़ो सब काम-धाम,बूथ पर पहुंच करो मतदान,
वोट देकर करो लोकतंत्र का सम्मान।

जाति-धर्म में कभी न बंटना,
निर्भय होकर तुम मतदान करना।

वोट देने हम सब जाएंगे,
जिम्मेदार नागरिक का फर्ज निभायेंगे।

लोभ-लालच और प्रलोभन में कभी न पड़ना,
लोकतंत्र के सम्मान में तुम मतदान जरूर करना।

अपने अपने बूथ पर है जाना,
वोट देकर है अपना फर्ज निभाना।

**मृत्युंजय कुमार**
NPS खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चंपारण

# विजयोत्सव दिवस

वीर कुंवर सिंह का असली नाम
बाबू वीर कुंवर सिंह था,
पिता का नाम बाबू शाहबजादा
माता का नाम पंचरत्न कुंवर था।

इनका जन्म १३ नवंबर १७७७ ई० को
बिहार के जगदीश पुर में हुआ,
२६ अप्रैल १८५८ को
वीर सिंह जी का निधन हुआ।

चार भाई में सबसे बड़े थे
तीन भाई इनसे छोटे थे,
अमर सिंह,दयालु सिंह और राजपति सिंह में
सबसे बहादुर वीर कुंवर सिंह थे।

२३ अप्रैल को इनके नाम से
लोग विजय उत्सव दिवस मनाते हैं,
इनके नाम से सब अपने घरों में
एक -एक दीपक जलाते हैं।

२३ अप्रैल को इनके नाम से
लोग विजय उत्सव दिवस मनाते हैं,
इनके नाम से सब अपने घरों में
एक -एक दीपक जलाते हैं।

वीर कुंवर सिंह स्वतंत्रता सेनानी थे
अंग्रेजों के दाँत खट्टे किए,
जब तक शरीर में दम था इनको
अंग्रेजों से लड़ते रहे।

खदेड़ -खदेड़ कर अंग्रेजों को मारा
जब तक वे नही दम तोड़े,
जब जगदीशपुर युनियन जैक का झंडा उतारा
तब तक चैन की न साँस लिए।

अपने शिखर पर पहुँच कर वे
अपने आप को गौरवान्वित महसूस किए,
भारत माता की गोदी में
बाबू वीर कुंवर सिंह दम तोड़े।

**नीतू रानी**
म०वि० रहमत नगर सदर मुख्यालय पूर्णियाँ बिहार।

# सर्दी का मौसम

देखो ठंडी हवा चली,
गाँव-शहर के गली गली।
सर्दी का मौसम है आया,
प्रकृति का संदेशा लाया।

दृढ न रहो, अटल न रहो,
रहो न एक जैसा हर बार।
तुम भी खुद को बदलो ऐसे,
मौसम बदले जिस प्रकार।

सदा न गर्मी रहती है,
न रहता बसात।
अभी तो सर्दी आयी है,
अभी हम देंगे इसका साथ।

चलो निकाले उनी कपड़े,
कम्बल और रजाई,
ठंडी शीत हवा चली है
देखो सर्दी आई।

सर्दी का मौसम है आया,
साथ में शीत हवाएं लाया।
तुम न इससे घबराना,
और न ही इससे टकराना।

गर्म वस्त्र सदा रखो तैयार,
अगर न होना है बीमार।
गर्म वस्त्र सदा रखो तैयार,
अगर न होना है बीमार।

देखो ठंडी हवा चली,
गांव शहर के गली गली।
सर्दी का मौसम है आया,
शीत हवाएं संग में लाया।

**मोहम्मद आसिफ इकबाल**
राजकीय बुनियादी विद्यालय उलाव बेगूसराय बिहार।

# बाल दिवस

प्रेम मुदित पल, सारा है।
बाल दिवस पर, वारा है।।

आओ मिलकर, बच्चों से।
वादा कुछकर, सच्चों से।।
आँखों का वह, तारा है।
बाल दिवस पर, वारा है।।०१।।

संग खेलकर, खुश करिए।
बाँह पकड़ कर, दम भरिए।।
प्रेम सुधा रस, धारा है।
बाल दिवस पर, वारा है।।०२।।

एक राष्ट्र हित, प्रीत भरें।
जीवन की नित, रीत धरें।।
करना जय जय, नारा है।
बाल दिवस पर, वारा है।।०३।।

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

# चुनाव कराते हैं

चलो एक बार फिर से
नई सरकार से मिलाते हैं,
लोकतंत्र के इस पर्व को
उत्सव की तरह मनाते हैं,
चलो... चुनाव कराते हैं!

प्रकृति के दो सुंदर चक्रों में,
जहाँ आदि है और अंत भी है,
कर उस आदि से आरंभ सफर,
अनजानों को अपना बनाते हैं,
चलो... चुनाव कराते हैं!

अजीब सी दास्तां है ये,
हर बार नया कुछ अनुभव है,
नए साथियों से मिलकर
सफल निर्वाचन बनाते हैं,
चलो... चुनाव कराते हैं!

सब मिलकर कदम बढ़ाते हैं,
निष्पक्षता के दीप जलाते हैं,
लोकतंत्र का मान बढ़ाते हैं,
जन-जन को जगाते हैं,
चलो... चुनाव कराते हैं!

**ओम प्रकाश**
भागलपुर, बिहार

# ये तो प्यारे बच्चे हैं

ये तो प्यारे बच्चें है,
मन के बड़े ही सच्चें है।

ये बच्चें है देश की शान,
चाचा नेहरु का यही अरमान।

फूलों का उनमें है रंग,
तितलियों सा है भरा उमंग।

भोले – भाले दिखते हैं,
लेकिन करते रहते हैं हुड़दंग।

इसकी हर अदा है निराली,
सबके मन को मोहने वाली।

सबको वो भा जाते हैं,
खुशियों से जब वें इठलाते है।

बाल दिवस पर नई कहानी,
हमें है अब सबको सुनानी।

ये तो प्यारे बच्चें है,
मन के बड़े ही सच्चें है।

**आशीष अम्बर**
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी, जिला – दरभंगा

# गुणगुणी धूप

सूरज निकलने का
रहता है इंतजार,
सुबह की धूप हमें, लगती तो प्यारी है।

दूर तक दिखती है
मखमली बिछी हुई,
घास पर ओस बूंदें, मोती जैसी न्यारी है।

पंछियाँ भी घोसले से
जाती है बाहर नही,
जब तक आती नही, रवि की सवारी है।

जल्दी बिछावन नही
छोड़ने को मन करे,
रजाई-गरम चाय, हो गई दुलारी है।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'

# मतदान करें

मतदान करें , स्वकार्य करें,
तरक्की का मार्ग प्रशस्त करें।
पाँच वर्ष में क्या खोया – पाया,
इस बात का जरूर संज्ञान करें।

मत से ही सरकार है बनती,
आपके मत से ही विकास होता।
आपके मत से सृजन की तान बनती,
आपके मत से ही कल्याण होता।

मत को देकर खुद अपने को,
जागरूक नागरिक कहलाएँ।
मतदान अवश्य करके ही,
अपनी सरकार चुनने का यश पाएँ।

यह ऐसा वैसा क़ोई काम नही,
इसका चक्र विकास से जुड़ा हुआ।
सभी एक – एक मत में ही,
बिहार का सौभाग्य भी छिपा हुआ।

पिछले पाँच वर्ष देखा – परखा है,
उससे ही मत यह बना हुआ।
यही लोकतंत्र की धुरी है,
इसी पर ही सारा तंत्र भी तना हुआ।

एक भारतीय होने क़े नाते,
आपको मतदान करना जरुरी है।
इससे ही तकदीर सबकी बनती,
यह सौ प्रतिशत जरुरी है।

चिंता न करें अन्य बातों का,
अपने मत का जरूर प्रयोग करें।
यही लोकतंत्र की शक्ति है,
जिसका कर्त्तव्य बुद्धि से उपयोग करें।

यह अपना कर्त्तव्य, अपना गौरव,
इससे देश, प्रदेश का मान बढे।
अपने मताधिकार क़े निर्वहन से,
हमें निश्चित ही स्वाभिमान जगे।

**अमरनाथ त्रिवेदी**
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा, जिला मुजफ्फरपुर

# बाल दिवस

कर लें थोड़ा हम सद्विचार

बच्चों को देख मेरे मन का,
संताप सहज खो जाता है।
बच्चों के साथ में जीने का,
सहचर्य अविरल हो जाताहै।

बच्चा बन पल रस पीने का,
आनंद तो अद्भुत होता है।
खुद अंतर्मन में बच्चे का,
स्वभाव अहर्निश होता है।

हम लाख करें अब चतुराई,
बच्चों का जन मन होता है।
हमने कर ली कुछ अधिकाई,
मन में बच्चा अब रोता है।

बच्चों की दुनिया है अद्भुत,
निर्मल निश्चल और निर्विकार।
घ्यानी ज्ञानी बनकर सचमुच,
करते हर पल हम भाव वार।

इस बाल दिवस को प्रण लें हम,
ना करें अब बचपन का संहार।
चाचा नेहरू को नमन करें हम,
कर लें थोड़ा हम सद्विचार।

**डॉ स्नेहलता द्विवेदी**
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

# निद्रा

कभी वास्तविक कभी काल्पनिक होती है यह निद्रा।
कभी प्रसन्नता कभी निराशा देती है यह निद्रा।
कभी साहस कभी भय देती है यह निद्रा।
कभी सन्मार्ग कभी कुमार्ग दिखाती है यह निद्रा।
कभी सहिष्णु कभी असहिष्णु बनाती है यह निद्रा।
कभी विवेक कभी अविवेक देती है यह निद्रा।
कभी दृढ़ संकल्पी कभी किंकर्तव्यविमूढ बनाती है यह निद्रा।
कभी अडिग कभी अविचल बनाती है यह निद्रा,
अटल बनाती है यह निद्रा,
स्थिर बनाती है यह निद्रा,
अचल बनाती है यह निद्रा।।

**बैकुंठ बिहारी**
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सहोड़ा गद्दी कोशकीपुर

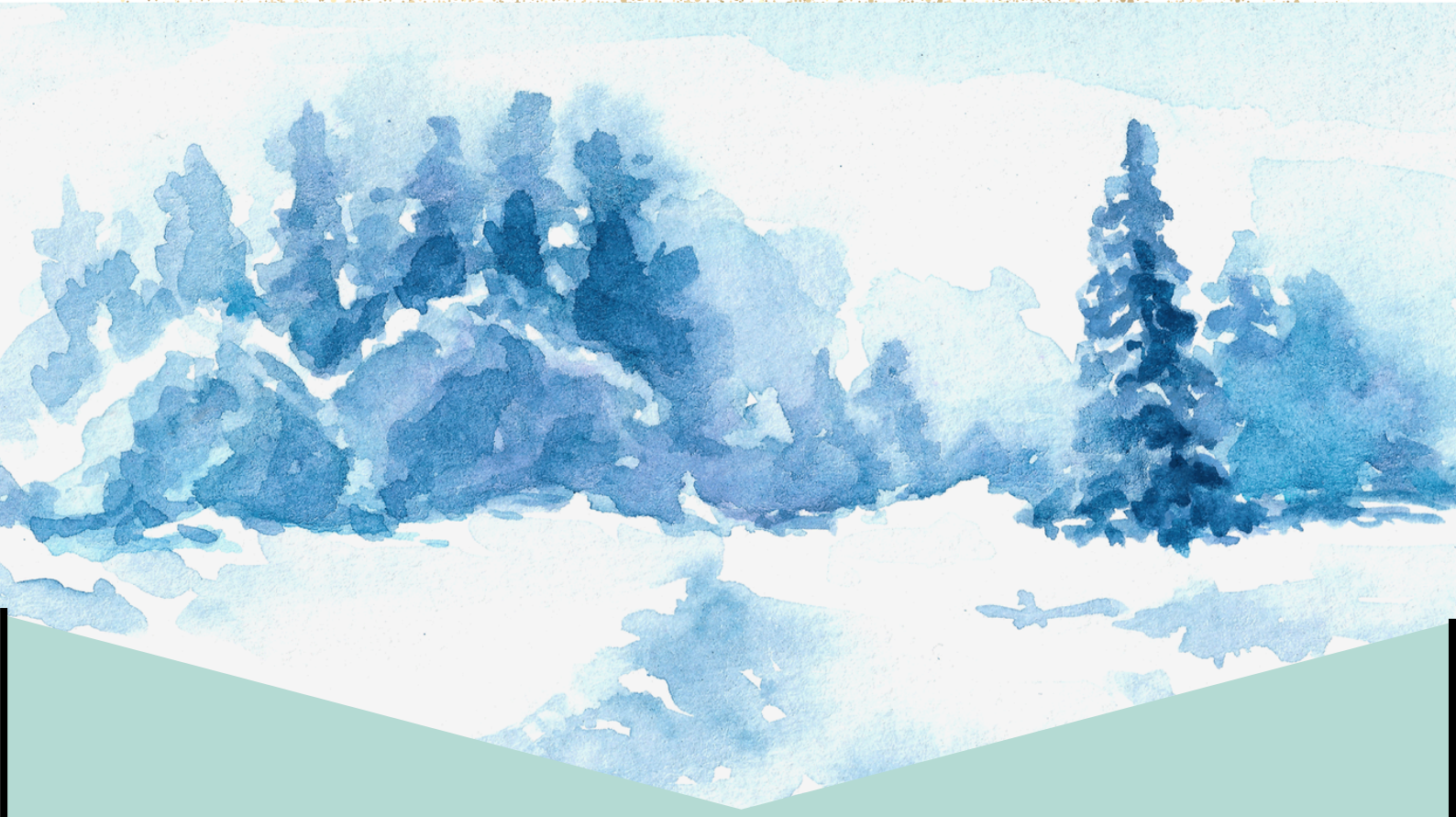

# पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

## Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |


***writers.teachersofbihar@gmail.com***

***padyapankaj.teachersofbihar.org***

**+91 7250818080 | +91 9650233010**



Reg. No. BR/2025/0487469


**पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें**